रिकार्ड:-बदल जाये दुनिया:-ओमशान्ति।रूहानी बच्चे जानते है कि बाप ब्रह्मा द्वारा समझाये रहे है।ब्रह्मा रथ द्वारा ही समझाते रहते हैं।हम प्रतिज्ञा करते है कि यह जो भारत की मुभी खासऔर दुनिया आम,उनको श्रीमत पर हम पतित से पावन बनाने का रास्ता बताते है।इतना ख्याल हरेक को अपनी बुद्धि में रखना है।बाप कहते है ड्रामा अनुसार जब तुम फूल बन जावेंगे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसारऔर जब वह समय आ जावेगा तो सम्पूर्ण बगीचा बन जावेगा।बागवान भी निराकार को कहा जाता है।माली भी निराकार को कहा जाता।साकार को नहीं।माली भी है ये आत्मा।न कि शरीर।बागवान भी आत्मा है।बाप समझावेंगे जरूर शरीर द्वारा ना।शरीर साथ ही उनको बागवान ,माली कहा जाता है।जो इस विश्व को फूलों का बगीचा बनाते हैं।बगीचा था, जहां यह देवताएं रहते थे।वहां कोई दुख न था।यहां इस कांटों के जंगल में तो दुख हैं।रावण का राज्य कांटों का जंगल है।फट से कोई फूल नहीं बनते।देवताएं के आगे जाये गाते भी है कि हम जन्म-जन्मान्तर के पापी है, अजामिल है, ऐसे प्रार्थना करते हैं।अब आकर हमको पुण्यात्मा बनाओ।समझते है अब हम पापात्मा है।कोई समय पुण्यात्मा थे।अभी इस दुनिया में पुण्यात्माओं का सिर्फ चित्र हैं।राजधानी के हेडस के चित्र है।और इन्हों को ऐसा बनाने वाला निराकार शिव उनका चित्र है।बस।और कोई चित्र है नहीं।इस में भी शिव का तो बड़ा लिंग बनाये देते है।कहते भी है कि आत्मा स्टार मिसल है।तो जरूर बाप भी ऐसा होगा ना।परन्तु उनकी पूरी पहचान नहीं है।इन लक्ष्मी नारायण का विश्व में राज्य था।इनके लिए कहीं भी कोई ग्लानी की बात नहीं लिखते।बाकि कृष्ण को कब द्वापर में कब कहां ले जाते।इन के लिए तू न कहेंगे स्वर्ग के मालिक थे।यह है तुम्हारा एमआबजेक्ट।राधे, कृष्ण कौन है, मनुष्यविचारे एकदम मूंझे हुये है।पत्थर बुद्धि होने कारण कुछ भी नहीं समझते।जो बाप द्वारा समझते है वह फिर समझाने लायक भी बनते है।नहीं तो लायक बन नहीं सकते।दैवी गुण धारण कर नहीं सकते।भल कितना भी समझाओ परन्तु ड्रामा अनुसार ऐसो ही होती है।तुम अभी खुद समझते हो हम सब बच्चे बाप की श्रीमत पर भारत की रूहानी सर्विस करते हैं।अपने ही तन मन धन से।प्रदर्शनी अथवा म्युजियम आद में पूछते है तुम भारत की क्या सेवा करते हो।तुम जानते हो हम भारत की बहुत अच्छी सर्विस करते हैं।जंगल से बगीचा बनाते रहे है।वह भी समझेंगे हम भी तब जंगल के है।सतयुग है गार्डन।यह है कांटों का जंगल।एक दो को दुख देते रहते है। यह तुम अच्छी रीत समझाये सकते हो।चित्र भी लक्ष्मी नारायण आद बहुत अच्छी बनानी चाहिए।मंदिरों में बहुत खुबसुरत चित्र बनाते है।कहीं गोरा कहीं सांवरा चित्र बनाते है।उनका क्या राज़ है यह भी पत्थर बुद्धि समझते नहीं।तुम बच्चों अभी यह सारा ज्ञान है।मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते।बाप को न जानने कारण मर्कट बन जाते है।रिप्लिका-बिल्कुल बन्दर जैसे है।बाप कहते है मैं आये मनुष्य बन्दरों को मन्दर लायक बनाता हूं।सभी मंदिर लायक नहीं बनते।प्रजा तो मंदिर लायक नहीं बनती है।पूजा उन्हों की होगी जो पुरूषार्थ कर बहुत सर्विस करते है।जिस्मानी सोसल सर्विस भी जो बहुत करते हैं उनका नाम बाला होता हैं।तुम्हारा भी सतयुग में नाम बाला होता है।पूज्य बनते है।तो इतनी सर्विस भी करनी चाहिए।अपना जीवन सफल करना है।चलन भी बहुत मीठी सुन्दर होनाचाहिए।जो और को भी मीठापन से समझाये।खुद ही कांटा हो गया तो फिर को फूल कैसे बनावेंगे।उनका तीर पूरा लगेगा नहीं।बाप को याद नहीं करते होंगे तो तीर न लगेगा।अपने कल्याण लिए अच्छी रीत पुरूषार्थ कर सर्विस में लगे रहो।बाप भी सर्विस पर है ना।तुम बच्चे भी सर्विस पर रहो सारा दिन।दूसरी बात बाबा समझाते थे शिव जयन्ती पर बहुत बच्चे तारें भेज देते हैं, उनमें भी ऐसो लिखत लिखनी चाहिए जो वह तार किसको भी दिखावें तो समझ जावे।आगे के लिए क्या करना है इसका प्रबन्ध किया जाता है।हे सेमीनार भी इस लिए करते है कि सर्विस करनी है।जो बहुतों को बाप का परिचय मिले।बाकि ऐसे गपोड़े नहीं रहें।इन से बहुत बाप से सीखो है।कितना पैसा भी जो आती

बैज पर भी लिखा हुआ है शिव बाबा केयर आफ. ब्रह्मा बाबा।यह भी इक्की होनी चाहिए।तो ऐसे ऐसे सब चिट्ठी में एड्रैस डालते हैं।शिव बाबा केयर आफ. ब्रह्मा।प्रजा पिता ब्रह्मा भी है।वह रूहानी पिता।वह जिस्मानी।उन से जिस्मानी रचना रची जाती है।बाप है मनुष्य सृष्टि का रचता।कैसे रचना रचते हैं यह दुनिया में कोई भी नहीं जानते।बाप ब्रह्मा द्वारा अब नई रचना रच रहे हैं।ब्राह्मण है चोटी ब्राह्मण, देवता,क्षत्री.।पहले शुद्र तो नहीं आ सकते।बाप ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचते है।शुद्र कैसे किस एडाप्ट होंगे।तुम बच्चे समझते हो कैसे नई रचना रचते हैं। यह एडाप्शन है। बाप की महिमा है।कल्प 2 बाप आयेंगे तुमको शुद्र से ब्राह्मण बनाते हैं।फिर ब्राह्मण से देवता बनाते हैं। ब्राह्मणों की सर्विस बहुत ऊँची है।वह ब्राह्मण लोग खुद ही पवित्र नहीं हैं तो दूसरों को पवित्र कैसे बनायेंगे। कोई भी ब्राह्मण ,संयासि को कब राखी नहीं बान्धेंगे।वह कहेंगा हम तो है ही पवित्र। तुम अपना मुँह देखो। तुम बच्चे भी कोई से राखी नहीं बन्धवाये सकते।दुनिया में तो सब एक दो को बान्धते हैं।बहन भाई को बान्धती है। यह रिवाज़ अभी निकला है।आगे ब्राह्मण बान्धते थे।सच्चे पवित्र ब्राह्मण तो तुम हो।वह तो अपवित्र बनते हैं ना।यही तो सूपी पवित्र है।अभी तुम शुद्र से ब्राह्मण बनने लिए पुरुषार्थ करते हो।समझाना पड़ता है मेल-फिमेल दोनो पवित्रता की प्रतिज्ञा करते हैं। कैसे बताये सकते है कि हम कैसे बाप की श्रीमत से पवित्र रह रहे हैं।अन्त तक यह काम विकार पर जीत रहे तो पवित्र जगत का मालिक बनेंगे।पवित्र दुनिया सतयुग को कहा जाता है।सो अब स्थापन हो रही है। तुम सब पवित्र हो। विकार में गिरने वाले किसको राखी बान्ध न सके।प्रतिज्ञा कर फिर अगर पतित बने तो कहेंगे तुमतो राखी बन्धने आये थे।फिर क्या हुआ।कहेंगे माया से हार खा ली।यह है युद्ध का मैदान।विकार बड़ा दुश्मन है।इन पर जीत पाने से ही जगत जीत बनेंगे।जगत जीत अर्थात राजा रानी बनना।प्रजा को जगत जीत नहीं कहेंगे।मेहनत तो राजा रानी करते हैं।कहते भी है हम तो लक्ष्मी नारायण बनेंगे।वह फिर राम सीता भी बनेंगे।लक्ष्मी नारायण के बाद उनकी तख्त पर जीत उनके बच्चे की होती है।वह लक्ष्मी नारायण फिर दूसरे जन्म में नीचे चले जावेंगे।फिर नाम रूप में।फिर बच्चे को गदी मिलती है।तो वह ऊँच नम्बर गिना जावेगा।पुनर्जन्म तो लेते है ना।बच्चा तख्त पर बैठेगा तो सेकन्ड ग्रेड हो जावेगा।उपर वाले नीचे ,नीचे वाले उपर आ जायेंगे।तो अब ऐसा ऊँच बनना हैं। तो सर्विस में लग जाना चाहिए।पवित्र होना भी बहुत जरूरी है।बाप कहते हैं मै पवित्र दुनिया बनाता हूँ।अच्छा पुरुषार्थ थोड़े करते हैं।पवित्र तो सारी दुनिया बन जाती है।तुम्हारे लिए स्वर्ग की स्थापना करते है। ड्रामा अनुसार होना ही है।यह खेल बना हुआ है।तुम पवित्र बन जाते हो। फिर विनाश शुरू हो जाता।सतयुग की स्थापना हो जाती है।ड्रामा को तो तुम समझ चुके हो।सतयुग में था ही देवताओं का राज्य।अभी नहीं है फिर होना है।इसलिए तुम मनुष्य से देवता बन रहे हो। दुनिया फिर चक्र खा रही है।फिर से 84 का चक्र में आना पड़ेगा।सब तो 84 जन्म नहीं लेंगे। यह भी समझ की बात है।तुम हो रूहानी मलेट्री।अपन को आत्मा समझो कि हम 5 विकारों पर जीत पाकर के जगत जीत बनने वाले हैं।जन्म जन्मान्तर के पाप कटने लिए बाबा युक्ति बतलाते हैं।बाप एक ही बार आये कर यह युक्ति बताते हैं।जब तक राजधानी स्थापन हो जाये तब तक विनाश नहीं होगा। तुम एकदम पहुँत वारिस हो। सतयुग होता ही कलयुग के बाद। फिर सतयुग में कब लड़ाई हो... तुम यह जानते हो सभी आत्मायें जो भी पार्ट बजाते है वह सारा नूंधा हुआ है। जैसे पुतलियाँ... है ना। ऐसे नाचते रहते हैं। यह भी ड्रामा है।हरेक का इस ड्रामा में पार्ट है।पार्ट बजाते2 तुम... नीचे उतरते आये हो।फिर अब उपर जाते हो।सतोप्रधान बनते हो।कलियुग तो सेकन्ड की है। सतोप्रधान बनते फिर फिर तमोप्रधान बनते है फिर बाप उपर ले जाते है।...

तार में लटकती है, उस तार में मनुष्यों को डालना चाहिए। ऐसे फिर उतरती कला फिर चढ़ती कला होती है। 5000 वर्ष लगती है। उपर जाये फिर उतरने में। यह 84 का चक्र तुम्हारे बुधि में है। उतरती कला और चढ़ती कला का राज़ बाप ने ही समझाया है। तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते है। और पढ़ाई करते है। जो बाप को याद करते है वह जल्दी उपर जाते हैं। यह प्रवृति मार्ग है। जैसे जोड़ी को दौड़ाते हैं तो उसमें कोई तो गिर भी पड़ते हैं। यह भी तुम्हारी दौड़ी है ना। जोड़ी भी पूरी अच्छी बान्धते है। जो ठीक नहीं, कोई की प्रैक्टीस नहीं होती है तो गिर पड़ते हैं। एक आगे बढ़ते है तो दूसरा रोक लेते हैं। दोनों गिर पड़ते है साथी गिरने वाला है तो खुद भी गिर जाते। नाम बदनाम करते है। बुढ़े को भी काम का नशा चढ़ जाता है। तकदीर मे न है तो गिर पड़ते है। बाबा वन्डर खाते हैं। वह बुढा, वह जवान, बहुत समझदार, बुढ़े को काम की आग लगी तो वह भी गिर पड़े। ऐसे थोड़े हो उसने गिराया। गिरना न गिरना अपने हाथ में है। कोई धक्का थोड़े ही देते है। हम गिरें क्यों। कुछ भी हो जाये हम गिरेंगे नहीं। गिरे तो खाना खाब। जोर से चमाट लगती है, फिर पछताव करते है। हड गुड टूट पड़ती है। बहुत चोट लग जाती है। बाबा भिन्न प्रकार से समझाते रहते है। यह भी समझाया शिव जयन्ती पर तार ऐसी जानी चाहिए जो मनुष्य पढ़ने से समझे। आदम तो पड़ा है। विचार सागर मंथन करने लिए बाबा टाईम देते है। तारों का पक्का रख हो। कोई देखे तो वन्डर खावे। कितनी विद्वत्ती आती है। सब लिखते बापदादा। तुम समझा सकते हो। शिव बाबा को बाबा, ब्रह्मा को दादा कहते है। एक को कब कोई बाप दादा कहते हैं क्या। यह तो वन्डर फुल बात है। इसमें सच्चा ज्ञान है। परन्तु विशाल बुधि नहीं। योग है नहीं। याद में रहे तब किसको तीर भी लगे। घड़ी2 देहाभिमान में आ जाते है। बाप कहते है आत्माभिमानी बनो। आत्मा ही शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। कोई मरता है तो कोई ख्याल नहीं। पार्ट जो आत्मा में नूंधा है इसको हम साक्षी हो देखते है। उनको एक शरीर छोड़ दूसरा ले पार्ट बजाना है। हम इस में क्या ही कर सकते। यह ज्ञान भी तुम्हारी बुधि मे है। वह भी नम्बरवार। कईयों की बुधि में तो ठहरता ही नहीं। आत्मा बिल्कुल होती तवा तमोप्रधान है। उन पर ज्ञानामृत डाला जाता है तो ठहरता नहीं इसलिए किसको समझा नहीं सकते। जिस ने बहुत भक्ति की हुई है वह ही तमोप्रधान बने है। उनको ही तीर लगेगा। झट धारणा होगी। कम भक्ति की होगी तो वह जब तता तवा है। हिसाब की वन्डर है। पहले नम्बर में पावन वह ही पतित बनते है। सबसे जास्ती भक्ति की है। तमोप्रधान सौसतोप्रधान नम्बर वन बनते है। भक्ति जास्ती नहीं की है तो उनको धारणा न हो होती। तता तवा उनको जिस ने शुरू से लेकर भक्ति नहीं की है। यह भी कितनी समझने की बाते होती है। कोई की तकदीर में न है तो पढ़ाई को ही छोड़ देते हैं। अगर छोटे पन से ही इस नालेज मे लग जाये तो धारणा होती जावेगी। समझेंगे इसने बहुत भक्ति की हुई है। बहुत होशियार होजाये। क्योंकि आरगन्स बड़ी होने से फिर समझ भी जास्ती आती है। जिस्मानी रूहानी दोनो तरफ अटेन्शन देने से फिर वह असर निकल जाता है। वह आसुरी पढ़ाई, पढ़ाने वाले असुर। यह ईश्वरीय पढ़ाई, फर्क है ना। परन्तु जब वह लगन भी लगे ना। फिर उन की वहां जाने दिल ही नहीं होगी। एकदम चटक जावेंगे। बच्चे भूले भी बहुत करते है। अच्छे2 नाम बदनाम कर देते है। बहुत डिसर्विस करते हैं। आपस में लूण पानी होने से। सेन्टर पर दो बच्चियाँ आपस में लूणपानी हो पड़ती। फिर जिज्ञासुओं पास एक दो की ग्लानी करते हैं। फिर पार्टियाँ बन जाती है। ताली तो दोनो हाथ से बजती है। ऐसे 2 बहुत विघ्न पड़ते है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रतिगुडमार्निंग।

पठानकोट का नई एड्रेस भेज रहे है:-

BRAHMA KUMARIS
opp. Ram lila Ground
PATHANKOT (Dist. Gurdaspur)